أذكار طرفي النهار

सुबह-शाम के अज़कार, दुआऐं

संपादक
अताउर्रहमान सईदी
अहसा इस्लामिक सेंटर होफूफ सऊदी अरब

नाम पुस्तिका : सुबह-शाम के अज़कार,दुआऐं

संपादक : अताउर्रहमान सईदी

संशोधक : अफ़रोज़ आलम मदनी

पृष्ठ संख्या : 37

प्रकाशन संख्या : 2000

प्रकाशन वर्ष : अप्रैल 2018

प्रकाशक : **दारुलख़ैर फाउंडेशन**
५, लेक पलाज़ा, तलाव पाली रोड,
कौसा, मुंब्रा, ज़िला थाने - ४००६१२
मोबाइल न. 9594690742

आम तौर पर ज़िक्र व अज़कार के लाभ तथा विशेष रूप से सुबह व शाम के अज़कार जिन्हें ऐक मुसलमान सदैव एवं फज्र के बाद तथा अस्र के बाद पढ़ता है असंख हैं, उन्हीं में से कुछ लाभ निम्नलिखित हैं :

1- यह अल्लाह पाक की महान दया तथा अ़ज़ीम नेअ़मतों (पदार्थ) में से है जिस से दास्य एवं बन्दह अल्लाह की याद तथा प्रशंसा प्राप्त करता है अल्लाह ने फरमायाः

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ (सूरहबक़र : 152)

तुम मुझे याद (स्मरण) करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा। तथा हदीसे कुदसी में अल्लाह पाक कहता है [जिस ने मुझे अपने मन में याद किया तो में उसे अपने मन में याद करता हूँ] (बुखारी, मुस्लिम)

2-अल्लाह की संगति एवं साथ, आत्मसंतोष प्राप्त होता है। अल्लाह पाक उस का ज़िक्र अपने पास मौजूद फरिश्तों में करता है। यह ईमान वालों के मन का भोजन है। अल्लाह पाक ने फरमाया :

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ﴾

जो लोग ईमान लाये उन्के दिल अल्लाह को याद करने में शान्ति प्राप्त करते हैं। याद रखो कि अल्लाह की याद ही से हृदय को शान्ति प्राप्त होती है (सूरः रअदः 28)

3- अल्लाह पाक सभी मनुष्यों तथा जिन्नातों की बुराई से सुरक्षित रखता है, अपने बन्दे की रक्षा करता ओर उस के लिए काफी होता है।

4- इन अज़कार (दुआओं) के पढ़ने पर नियुक्त किये गये फल तथा सवाब पाता है जैसे 100 गुलाम आज़ाद करना,नेकियाँ लिखा जाना,पाप क्षमा किया जाना तथा शैतान से रक्षा आदि।

5- बन्दे के लिऐ भलाई. बरकत और रोज़ियों के दुवार खुल जाते हैं।

6- अल्लाह पाक से बन्दे का संबन्ध,उस की लगातार दया एवं नेअ़मतों का स्वीकरण ओर उस के ऐहसान तथा उपकार के अनुभव को अत्यधिक मज़बूत एवं बलवान करता है।

7- बन्दे के हृदय में यह अनुभव सदैव जीवित रहेगा कि वो हर पल तथा हर क्षण अल्लाह पाक का मुहताज है तथा पलक

झपकने के बराबर भी उस से निस्पृह ओर बेनियाज़ नहीं।

8- बुराई तथा खराबी आने से पहले या आने के बाद बन्दे के लिए यह बहुत महान एवं शक्तिशाली हथियार है।

9- हृदय तथा प्राण की यह पवित्र भोजन है क्योंकि इस से उन में शान्ति, संतुष्ठा,चैन और प्रसन्नतायें तथा खुशियाँ पैदा होती हैं।

10- संसार तथा प्रलोक की बुराई से बचाव ओर अमन व शान्ति के महान सधानों में से है।

11- यह घरों से शैतान को भगाता तथा उसे चकनाचूर ओर कमज़ोर करता है।

12- यह शारीरिक दुर्बलता को दूर करता

है, दिल से शोक संताप तथा गम समाप्त करता, दिल को ताज़गी एवं प्रफुल्लता, ताकत, प्रसन्नता तथा खुशयाँ देता है।

13- यह बन्दे के चेहरे को तरवताज़ह और सजल करता है, लोगों के बीच रोबदार (तेजस्वी) बनाता है, सीने को विशाल एवं चौड़ा तथा ईमान को शक्ति प्रदान करता है।

14- बन्दे को अल्लाह की मुहब्बत ,उस की प्रसन्नता, दया, सहायता और तौफ़ीक़ एवं क्षमता मिलती है।

15- यह बन्दे को अपने रब के संबन्ध सदभाव, उस पर सम्पूर्ण भरोसा प्रदान करते हैं. तथा इस बात पर दृंढ़विश्वाष दिलाते है कि अल्लाह पाक उस का

बेहतरीन संरक्षक है।

16- यह बन्दे को कपटाचार (निफ़ाक़) जैसी बुरी प्रकृति एवं आदतों से बचाता है क्योंकि कपटीचारी एवं मुनाफिक़ अल्लाह को बहुत कम याद करते हैं।

17- यह कठोरहृदयता,चेहरों तथा आँखों से उदासी, हताशा, अहंकार एवं घमंड को समाप्त करता है तथा शरीर को अपनी ज़िम्मेदारियों के निभाने में सहयोगी होता है।

19- यह बैरियों पर जीत तथा सहायता के महान साधनों में से है।

20- इन ज़िक्र व अज़कार करने वालों के लिए संकटों के समय यह सहयोगी होते हैं तथा उस पर संकट ओर मुसीबत सरल हो

जाती है।

21- यह स्वर्ग में जाने तथा नर्क से मुक्ति पाने के महान साधनों में से है। महाप्रलय के दिन अल्लाह पाक उसे प्रसन्न कर देगा। यह स्वर्ग के पौदे, उस की मोतियाँ तथा उस की ईंट है।

22- सुबह तथा शाम इनके पढ़ने से हृदय की सफाई होती है, ईमान को ताक़त मिलती है विश्वास में बढ़ोतरी होती है, जुबान को स्वाद तथा मिठास मिलती है, अल्लाह पाक से संबंध मज़बूत होता है, संसार और प्रलय का सौभाग्य प्राप्त होता है, प्रत्यक क्षण अल्लाह पाक के ज़िक्र का पाबन्द मन का अचछा वचन तथा वादे का सच्चा, नेकी में दूसरे से आगे बढ़ने वाला अल्लाह पाक के सीमाओं का पाबन्द,

उसके आदेशानुसार चलने वाला, उस की रोकी हुई चीज़ों से रुकने वाला, संसार से लापरवाह ओर महा प्रलय को सोचने वाला होता है।

मुसलमानों! इन असंख लाभदायक ज़िक्र व अज़कार को प्रति दिन अवश्य पाबन्दी से पढ़ा करो तथा हमें भी अपनी आशीर्वादें देते रहो !

आप का शुभेच्छुक :

अताउर्रहमान अब्दुल्लाह सईदी

हरहटा,तुलसीपुर,बलरामपुर यु.पी

पुनरीक्षण :

शैख अफ़रोज़ आलम मदनी

सुबह तथा शाम की दुआऐं

1- सूरह इख़्लास, सूरह फलक़, तथा सूरह नास तीन तीन बार

بسم الله الرحمن الرحيم (सूरह इख्लास)

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ (١) اللَّهُ الصَّمَدُ (٢) لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (٣)
وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ (٤)

(बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम, कुल् हुवल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद व लम यूलद,वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद् (तीन बार)

अर्थ : आप कह दीजिये वह अल्लाह एक ही है। (अल्लाह तआ़ला) किसी के अधीन नहीं सभी उसके अधीन हैं। न उससे कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया। तथा न कोई उसका समकक्ष और उसके

बराबर है।

بسم الله الرحمن الرحيم (सूरह फ़लक़)

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (١) مِن شَرِّ مَا خَلَقَ (٢) وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ (٣) وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ (٤) وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (٥)

2- बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम, कुल अ़ऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़, मिन शर्रि मा खलक़, वमिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब, वमिन शर्रिन नफ्फासाति फ़िल उ़क़द व मिन शर्रि ह़ासिदिन इज़ा ह़सद। (तीन बार)

अर्थ : आप कह दीजिये कि मैं सुबह के रब की पनाह (शरण) में आता हूँ। उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है। तथा अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधेरा फैल जाये। तथा गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)। तथा

हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।

بسم الله الرحمن الرحيم (सूरह नास)

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ (١) مَلِكِ النَّاسِ (٢) إِلَٰهِ النَّاسِ (٣)
مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (٤) الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ
النَّاسِ (٥) مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (٦)

3- बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम, कुल अ़ऊ़ज़ु बिरब्बिन्नास, मलिकिन्नास, इलाहिन्नास, मिन शर्रिल वसवासिल् खन्नास, अल्लज़ी युवसविसु फी सुदूरिन्नास, मिनल जिन्नति वन्नास। (तीन बार)

अर्थ : आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की पनाह में आता हूँ। लोगों के मालिक की (तथा) लोगों के पूजने के लायक़ (मअ़बूद) की (पनाह-शरण में)। शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई

से।

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

4- लाइलाहा इल्लल्लाहु वह़दहू लाशरीका लहू, लहुल्मुल्कु वलहुल् ह़म्दु वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर। (एक या दस या सौ बार)

अर्थः अललाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई भागीदार एवं शरीक नहीं, उसी के लिये सारी प्रशंसा तथा हर प्रकार की बादशाहत (सत्ता) है, तथा वह हर चीज़ पर शक्तिमान और कुदरत वाला है।

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ

5- सुब्हानल्लाहि व बिह़म्दिही। (सौ बार)

अर्थः मैं अल्लाह की तारीफ़ (प्रसंशा) के साथ उस की पाकी (पवित्रता) बयान करता हूँ।

بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ.

6- बिस्मिल्लाहिल्लज़ी लायज़ुर्रु मअ़ इस्मिही शैउन् फिल् अर्ज़ि वला फिस्समाइ वहुवस्समीअुल् अ़लीम। (तीन बार)

अर्थ : अल्लाह के नाम के साथ, जिस के नाम के साथ पृथ्वी तथा आकाश में कोई चीज़ हानी नहीं पहुँचा सकती, और वही सुन्ने वाला, जान्ने वाला है।

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

7- अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़लक़। (तीन बार)

अर्थ : मैं अल्लाह के पूर्ण कलिमात (बचन) के साथ उन सारी चीज़ों की बराई से पनाह चाहता हूँ जो उसने पैदा किया।

رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا وَّبِالإِسْلاَمِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا رَّسُوْلاً.

8- रज़ीतु बिल्लाहि रब्बा वबिल् इस्लामि दीना व बिमुहम्मदिं नबीयर्रसूला (तीन बार)

अर्थः मैं अल्लाह को अपना रब मान कर और इस्लाम को अपना दीन मान कर तथा मुहम्मद (स.अ.व.) को अपना नबी एव् रसूल मान कर राज़ी हूँ

حَسْبِيَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ.

9- हस्बियल्लाहु लाइलाहा इल्ला हुवा अ़लैहि तवक्कल्तु वहुवा रब्बुल्अ़र्शिल् अ़ज़ीम। (सात बार)

अर्थः मुझे अल्लाह ही काफी है, उस के सेवा कोई पूजा के योग्य अथवा लायक़

नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया है, तथा वही अर्शेअ़ज़ीम (सिंहासन) का रब है।

أَصْبَحْنَا (أَمْسَيْنَا) عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَعَلَى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ، وَعَلَى مِلَّةِ أَبِيْنَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

10- अस्बहना (शाम में अम्सैना कहें) अ़ला फित्रतिल् इस्लाम व अ़ला कलिमतिल् इख़्लास, व अ़लादीनि नवियेना मुहम्मदिं (स.अ.व.) व अ़ला मिल्लति अबीना इब्राहीमा हनीफम्मुस्लिमा वमा काना मिनल् मुश्रिकीन।

अर्थ : हम ने इस्लाम की फितरत (प्रकृति) और कल्मऐ इख्लास, (निस्वार्थता), तथा अपने नबी मुहम्मद (स.अ.व.) के दीन और अपने पिता इबराहीम के धर्म एवं मिल्लत

पर सुबह की तथा वह मुश्रिकों (अनेकेश्वर वादियों) में से नहीं थे।

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لله (शाम में) أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ.....)وَالْحَمْدُ لله، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذَا الْيَوْمِ، وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْ هَذَا الْيَوْمِ، وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ، رَبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ، وَسُوْءِ الْكِبَرِ، رَبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ، وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ، (शाम में) رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِيْ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا،

11-अस्बह़ना वअस्बह़ल् मुल्कु शाम में कहें)अमसैना व अमसलमुल्क०००) लिल्लाहवल्ह़म्दु लिल्लाह,लाइलाहा इल्लल्लाहु वह़दहू लाशरीका लहू, लहुल्

मुल्कु वलहुल् ह़म्दु वहुवा अ़ला कुल्लि शैइंक़दीर रब्बि असअलुका ख़ैरा माफीहाज़ल् यौमि वखैरामाबअ्दहूव अऊ़ज़ुबिकामिन् शर्रि माफीहाज़ल् यौमि वशर्रि माबअ्दहू रब्बि अऊ़ज़ुबिका मिनल् कसलि वसूइल् किबरिरब्बि अऊ़ज़ुबिका मिन् अ़ज़ाबिन् फिन्नारि वअ़ज़ाबिन् फिल् कब्रि। (शाम में कहें) रब्बि असअलुका खैरामाफी हाज़िहिल्लैलति व शर्रि मा बअ्दहा व अऊ़ज़ुबिकामिन् शर्रि मा फी हाज़िहिल् लैलति वशर्रि मा बअ्दहा)

अर्थ :[हम ने सुबह की,और अल्लाह के मुल्क (राज्य) ने सुबह की। तथा समस्त प्रशंसा अललाह ही के लिए है। अललाह के सिवा कोई वास्तविक पूजनीय नही,वह एकेला है उसका कोई भागीदार नहीं, उसी केलिए समस्त प्रशंसा ओर बादशाहत सत्ता) है,और वह प्रत्येक वस्तु पर

सर्वशक्तिमान है। हे मेरे रब्ब आजके इस दिन मेंजो खैर व भलाई हैऔर जो इस दिन के बाद खैर व भलाई है मैं तुझसे उसका सवाल करता हूँ। और इस दिन की बुराई से तथा इसके बाद वाले दिन की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। हे मेरे रब्ब मैंसुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। हे मेरे रब ! मैं नर्कके अ़ज़ाब तथाकब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ।]

[हमने शाम किया अललाह के मुल्क (राज्य) ने शाम किया . . हे मेरे रब्ब मैं तुझसे आज की रात तथा इसके बाद की भलाई माँगता हूँ ओर आज की रात तथा इस के बाद की बुराई से मैं पनाह चाहता हूँ।

اَللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا، وَبِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ، وَإِلَيْكَ النُّشُورُ (शाम में यह कहें) اَللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا، وَبِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيَا، وَبِكَ نَمُوتُ، وَ

إِلَيْكَ الْمَصِيرُ.

12- अल्लाहुम्म बिका अस्बह़ना व बिका अम्सैना वबिका नह़या व बिका नमूतु वइलैकन्नुशूर।

अर्थः हे मेरे अल्लाह! तेरी ही कुद्रत (शक्ति) से हम ने सुबह की तथा तेरी ही कुद्रत से हम ने शाम की और तेरी ही क़द्रत से हम जीवित हैं और तेरी ही कुद्रत से हम मरेंगे और तेरी ओर उठ कर जाना है।

(शाम में यह कहे)अल्लाहुम्म बिकाअम्सैना वबिकाअस्बह़ना व बिका नह़या व बिका नमूतु व इलैकल् मसीर

अर्थः हे मेरे अल्लाह! तेरी ही कुद्रत (शक्ति) से हमने शाम की तथा तेरी ही कुद्रत से हमने सुबह की और तेरी ही कुद्रत से हम जीवित हैं और तेरी ही कुद्रत से हम मरेंगे और तेरी ओर उठ

कर जाना है।

اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ (أَمْسَيْتُ)، أُشْهِدُكَ، وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ، وَمَلاَئِكَتَكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ، بِأَنَّكَ أَنْتَ اللهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ.

13- अल्लाहुम्मा इन्नी अस्बह़तु (शाम में अम्सैतु कहें) उश्हिदुका वउश्हिदु हमलत अर्शिका वमलाइकातका वजमीअ़ा खल्क़िका बिअन्नका अन्तल्लाहु लाइलाहा इल्ला अन्ता वह़्दका लाशरीका लका वअन्ना मुहम्मदन् अ़ब्दुका वरसूलुक। (एक या दो या तीन या चार बार)

अर्थः हे मेरे अल्लाह मैं ने इस हाल में सुबह की (शाम किया) कि तुझे गवाह बनाता हूँ ताथ तेरा अर्श उठाने वालों को, तेरे फरिश्तों को और तेरी सारी मखलूक़ को

गवाह बनाता हूँ तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू अकेला है, तेरा कोई साझी नहीं, निःसन्देह मुहम्मद (स.अ.व.) तेरे बन्दे और तेरे रसूल (सन्देशवाहक) हैं।

اَللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ (أَمْسَى) بِي مِنْ نِعْمَةٍ، أَوْ بِأَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لاَ شَرِيْكَ لَكَ، فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ.

14- अल्लाहुम्म मा अस्बहा (शाम में ,अम्सा कहें गे) बी मिन् नेअ़्मतिन् अव बिअहदिं मिन् ख़ल्क़िक़ा फमिन्का वह़दका लाशरीका लका, व लकल्हम्दु व लकश्शुक्रु।

अर्थः ऐ अल्लाह मुझ पर या तेरी सृष्टि में से किसी पर जिस नेमत (कृपा) ने भी सुबह (साँझ) की है वह केवल तेरे ओर से है, तू अकेला है तेरा कोई साझी नहीं, तेरे ही

लिए प्रशंसा है, और तेरे ही लिए शुक्र (धन्य) है।

يَاحَيُّ يَاقَيُّومُ بِرَحمتك أَسْتَغِيثُ، فأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلِّهِ، وَلاَ تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ.

15- या ह़य्यु या क़य्यूमु बिरहमतिका अस्तग़ीसु, फअस्लिह़ ली शअ्नी कुल्लिही वला तकिल्नी इला नफ्सी तर्फता ऐन।

अर्थः ऐ सदवै जीवित रहने वाला ! ऐ कायम रखने वाला ! मैं तेरी ही रहमत से फरयाद करता हूँ, मेरे सारे कार्य सही कर दे, तथा आँख झपकने के बराबर भी मुझे मेरे आत्मा के हवाले न कर।

اَللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اَللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اَللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

16- अल्लाहुम्मा आ़फिनी फी बदनी अल्लाहुम्मा आ़फिनी फी समई अल्लाहुम्मा

आ़फिनी फी बसरी लाइलाहा इल्ला अन्त (तीन बार)

अर्थः ऐ अल्लाह मुझे मेरे शरीर में आफियत (शान्ति) दे, ऐ अल्लाह मुझे मेरे कान में शान्ति दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे आँख में शान्ति दे, तेरे सिवा कोई पूजा के लायक़ (योग्य) नहीं।

اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ, وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ, لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ.

17- अल्लाहुम्मा इन्नी अऊ़ज़ुबिका मिनल् कुफ्रि वल्फक्रि व अऊ़ज़ुबिका मिन् अ़ज़ाबिल् क़ब्रि लाइलाहा इल्ला अन्त (तीन बार)

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं कुफ्र और गरीबी से तेरी

पनाह (शरण) चाहता हूँ, तथा क़ब्र की सजा से तेरी पनाह व शरण चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई पूजा के लायक़ (योग्य) नहीं।

اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ وَدُنْيَايَ وَأَهْلِيْ وَمَالِيْ، اَللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ، وَآمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللَّهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ، وَمِنْ خَلْفِيْ، وَعَنْ يَمِيْنِيْ، وَعَنْ شِمَالِيْ، وَمِنْ فَوْقِيْ، وَأَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ.

18- अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल् अ़ाफियता फिद्दुनया वल्आख़िरति अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकल् अ़फ्वा वल्अ़ाफियता फी दीनी व दुन्याया व अह्ली व माली अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती व आमिन् रौआ़ती अल्लाहुम्महफ़्ज़नी मिम्बैनि यदैया वमिन् खल्फ़ी वअ़न् यमीनी वअ़न् शिमाली

व अऊज़ु बिअ़ज़मतिका अन् उग़्ताला मिन् तह़्ती।

अर्थः ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुनिया तथा आखिरत (परलोक) में आफ़ियत (शान्ति) और क्षमा की बिन्ती करता हूँ, ऐ अल्लाह मैं अपने धर्म (इस्लाम), अपनी दुनिया, अपने परिवार तथा अपने धन में तुझ से क्षमा और शान्ति की बिन्ती करता हूँ, ऐ अल्लाह मेरी गुप्त, पर्दा वाली चीज़ पर पर्दा ड़ाल दे, मेरी व्याकुलता, घबराहटों को संतुष्टि एवं सुकून में बदल दे। ऐ अल्लाह मेरे आगे से, मेरे पीछे से, मेरे दायें ओर से मेरे बायें ओर से और मेरे ऊपर से मेरी सुरक्षा कर, और इस बात से मैं तेरी अज़मत एवं महानता द्वारा पनाह तथा शरण चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक व नष्ट किया जाऊँ।

اَللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهُ، أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ، وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلٰى نَفْسِيْ سُوْءًا، أَوْ أَجُرَّهُ إِلٰى مُسْلِمٍ.

19- अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल् अर्जि आ़लिमल् गैबि वश्शहादति, रब्बा कुल्लि शैइन् वमलीकहु, अश्हदु अल्लाइलाहा इल्ला अन्ता, अऊ़ज़ुबिका मिंशर्रि नफ्सी व शर्रिश्शैतानि व शिर्किहि-व-अन्अक़्तरिफा अ़ला नफ़्सी सूअन् अव अजुर्रुहु इला मुस्लिम।

अर्थः ऐ अल्लाह! आकाशों एवं धरती को सृष्टा, ऐ गैब (अदृश्य) तथा हाज़िर को जान्ने वाले हर चीज़ के पालनहार और मालिक एवं स्वामी! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य एवं इबादत के

लायक़ नहीं, मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने मन की बुराई तथा शैतान की बुराई से और उस के साझा से तथा इस बात से कि मैं अपने मन पर बुराई करूँ या किसी मुस्लिम पर पाप करूँ।

اَللَّهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا وَعَمَلاً مُّتَقَبَّلاً.

20- अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुका इ़ल्मन् नाफिअ़न् व रिज़्क़न् तैयिबन् व अमलन् मुतक़ब्बला।

अर्थः ऐ अल्लाह मैं तुझ से लाभदायक ज्ञान और,पवित्र जीविका एवं रोज़ी और (सवीकार्य क्रम) कुबूल होने वाला अमल माँगता हूँ।

اَللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ، خَلَقْتَنِيْ وَأَنَا عَبْدُكَ،

وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ، وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ.

21- अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी लाइलाहा इल्ला अन्ता ख़लक़्तनी वअना अ़ब्दुका वअना अ़ला अहदिका व वअ़्दिका मस्ततअ़्तु अऊ़ज़ुबिका मिंशर्रि मा सनअ़्तु, अबूउु लका बिनिअ़्मतिक अ़लैया, वअबूउु लका बिज़ंम्बी फग़्फिर्ली फइन्नहू लायग़्फिरुज़्ज़ुनूबा इल्ला अन्ता।

अर्थः ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब्ब (प्रभु) है। तेरे सिवा कोई उपास्य तथा इबादत के लायक़ नहीं। तूने मुझे पैदा किया, तथा मैं तेरा दास हूँ, मैं अपनी ताकत अनुसार तेरे प्रतिज्ञा तथा वादे पर कायम हूँ। मैं ने जो

कुछ किया उस की बुराई से तेरी पनाह (शरण) चाहता हूँ। मैं अपने ऊपर तेरे उपकार का इकरार करता हूँ और अपने अपराध एवं पापों को स्वीकार करता हूँ, अतः मुझे क्षमा कर दे क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा पापों को क्षमा नहीं कर सकता

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَّعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

22- अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मद वअ़ला आलि मुहम्मद कमा सल्लैता अ़ला इब्राहीमा वअ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद अल्लाहुम्मा बारिक अ़ला मुहम्मद वअ़ला आलि मुहम्मद कमा

बारक्ता अ़ला इब्राहीमा वअ़ला आलि इब्राहीमा इन्नका हमीदुम्मजीद। (दस बार)

अर्थः ऐ अल्लाह दया कर मुहम्मद (उन पर दरूद व सलाम हो) और उन के परिवार पर, जिस प्रकार तूने इब्राहीम और उनके परिवार पर दया की है, निःसन्देह तू प्रशंसा वाला गौरवशाली एवं बुज़ुरगी वाला है। ऐ अल्लाह बरकत उतार मुहम्मद (उन पर दरूद व सलाम हो) और उनके परिवार पर, जिस प्रकार तूने इब्राहीम और उन के परिवार पर बरकत उतारी है, निःसन्देह तू प्रशंसा वाला गौरवशाली एवं बुज़ुरगी वाला है।

(यह दुआऐं शैख़ बक्र बिन अब्दुल्लाह अबूज़ैद की पुस्तक अज़्कारु तरफइन्नहार से ली गईं हैं)